RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

फ्रैंकफर्ट स्कूल और संस्कृति उद्योग की अवधारणा

Dr. Naveen Raman

PhD in Hindi

फ्रैंकफर्ट स्कूलमें 1923 फ़रवरी 3 जर्मनी की स्थापना, हुई। संस्कृति , अवधारणा और अध्ययन पद्धति के लिहाज़ से फ्रैंकफर्ट ,समाज स्कूल की विचारधारा अपने आप में संशलिष्ट है।[1] इसकी एक बड़ी वजह यह है कि इसमें एक ही विषय को लेकर समीक्षकों ने एक - दूसरे से बिल्कुल अलग स्थापनाएँ दी है। किसी ने विश्लेषण का किसी ने , आधार ऐतिहासिक घटनाक्रमों और निर्णयों को बताया विविध दार्शनिक विचारधाराओं के माध्यम से समाज और परिवेश उपभोग और वितरण- किसी ने उत्पादन , को समझने की बात कही को संस्कृति और समाजको समझने का सबसे बेहतर माध्यम बताया। इन सब के बावजूद इन सबका उद्देश्य पूँजीवाद के नये रूपों और उनके बीच पनपने वाली विचारधाराओं की आलोचना और नये विचारों की प्रस्तावना रही। [2] फ्रैंकफर्ट स्कूल के इन आलोचकों ने इसके लिए 'क्रिटिकल थ्योरी '(critical theory) पदबंध का इस्तेमाल किया। आलोचना की एक ऐसी अवधारणा जो कि पूँजीवादी बूर्ज्वा सोच से अलग एक वैचारिकी को प्रोत्साहित करता है। इसे उन्होंने 'विचारधारा का विकल्प ' बताया। [3] उनकी इस अवधारणा से सामाजिक परिवर्तनों को पूरी तरह आर्थिक स्तर पर विश्लेषण करने के बजाय सांस्कृतिक स्तर पर विश्लेषित करने के संदर्भों में जानने समझने में काफ़ी हद तक मदद मिलती।- इसलिए मार्क्सवाद से एक हद तक जुड़े होने के बावजूद भी यह उससे बिल्कुल अलग मान्यता को प्रस्तावित करते हैं और पुनर्जागरण की आलोचना करने के क्रम में मार्क्सवाद की भी आलोचना करते हैं। [4] विश्लेषण का आधार आर्थिक से अधिक सांस्कृतिक गतिविधियों और उसके बीच पूँजी की सक्रियता को पहचानकर इनकी सैद्धांतिकी ने संस्कृतिमूलक अध्ययन पद्धति को मजबूत करने का काम किया है।

टॉम वॉटममूर ने अपनी किताब *फ्रैंकफर्ट स्कूल ऐंड इट्स क्रिटिसिज़म* में फ्रैंकफर्ट स्कूल की स्थापना और मान्यताओं की चर्चा विस्तार से की है। वॉटममूर ने इसे अलग अलग कालखंडों में बाँटकर देखा है और उस- दौरान विश्लेषण के आधार और विषयों की चर्चा की है। उदाहरण के तौर पर 1923- को वे पहला कालखंड 1933 मानते हैं। जहाँ विचारधारा के स्तर पर सिर्फ़ मार्क्सवाद को उत्पादन , अपर्याप्त बताया गया। ग्रुनवर्ज के निर्देशन में पूँजी अलग- और अधिकार के संबंधों को एशिया के अलग प्रांतों में देखने का काम किया गया और यह समझन े की कोशिश की गयी कि सभी जगह ये नियम एक ही रूप में लागू नहीं होते।

वॉटममूर ने 1933- को फ्रैंकफर्ट स्कूल का दूसरा 1950 हीगलवादी विचारधारा को- कालखंड माना जिसमें नव्य स्कूल में विशेष स्थान दिया गया। इस दौर में स्कूल की बाग़डोर होर्खाइमर के हाथों में आयी और उसन े विश्लेषण का क्रम एक बार फिर इतिहास और उत्पादन प्रक्रिया से हटाकर दर्शन की तरफ़ विकसित किया। स्कूल के इतिहास को समझने की दृष्टि से इस दौरान की दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं को जानना अनिवार्य है। एक तो स्कूल में मनोवैज्ञानिक स्तर पर विश्लेषण का दौर इसी समय से शुरू होता है और दूसरा इसी दौर में मारक्यूजे)1932 ( ) और एडॉर्नो1938 स्कूल की सदस्यता ग्रहण करते हैं। (स्कूल और साथ ही संस्कृति अध्ययन के क्षेत्र के लिए

---

[1] टॉम वॉटम्मोरे(2002): दि फ्रैक्फर्ट स्कूल एंड इट्स क्रिटिक्स,पेज नं-11राउट्लेज , 270 मैडिसन एव, न्यूयार्क,एनबाइ 10016

[2] फ्रैब(1984) मार्डन सोशल थ्योरी-अध्याय ,11 पेज नं-184 लंदन एंड, हार्वेस्टर वीटशेफ,न्यूयार्क

[3] Frankfort School that introduced the **Critical theory** to the lexicon of 20th century theoretical work. टॉम वॉटम्मोरे(2002): दि फ्रैक्फर्ट स्कूल एंड इट्स क्रिटिक्स,पेज नं-11 ,राउट्लेज 270 मैडिसन एव, न्यूयार्क,एनबाइ 10016
According to the Frankfort school,refers to the creation of a philosophical alternative to the dominant bourgeois capitalist mode of thinking. जॉन ए वीवर(2005), पॉपुलर कल्चर प्राइमर, पेज न-26,पीटर लांग पब्लिशिंग,न्यूयार्क,275 सेवेंथ एवन्यू,28 वां तल,न्यूयार्क,10001

[4] The theory rejects the prospects of rational emancipation offered by the enlightenment but also involves a critique of Marxism. The argument here is more complicated because the school draws upon while at the same time criticising Marxist theory. ......The concept of the culture industry captures the continuing commitment to Marxism(industry as the basic power of capitalism) and the original character of the school's contribution(cultur as a casual factor in its own right.). in emphasizing the position and importance of culture and ideology,the school can be seen as trying to fill in a part of the picture of capitalism Marx didn't deal with. डॉमिनिक स्ट्रीनॉती (2006), एन इन्ट्रोडक्शन टू दि थ्योरिज ऑफ़ पॉपुलर कल्चर,पेज नं 48, राउटलेज 270 मेडिसन एवन्यू,न्यू ऑर्क,10016

RRIJM 2015, All Rights Reserved

एडॉर्नो की मान्यता , बेहतर स्थिति रही कि मारक्यूजे होर्खाइमर से अलग होने के वाबजूद इन लोगों को अपनी मान्यताओ्ं का विकास करने का पूरा मौक़ा मिला और स्कूल की पहचान किसी एक मान्यता को मजबूत करने के बजाय संश्लिष्ट और एक दूसरे से अलग मान्यताओं के विकास करने के रूप में हुई। इसी दौरान वॉल्टर बेंजामिन ने एडॉर्नो से अलग पूँजीवाद से पैदा होने वाली संस्कृति का विश्लेषण किया और नयी मान्यता प्रस्तावित की।

स्कूल का 1950- तक का कालखंड सबसे 1960 महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस दौरान ख़ासकर मारक्यूजे और एडॉर्नो ने जिन पुस्तकों और आलेखों के ज़रिये समाज और उत्पादन प्रक्रिया को विश्लेषित किया ,संस्कृति वे'क्रिटिकल थ्योरी'[5] की मान्यताओं को स्थापित करने में बहुत मददगार साबित हुए। इसने अब तक की विचारधाराओं और स्थापनाओं से अलग अपनी पहचान बनायी।

जिसे वह ,के बाद फ्रैंकफर्ट स्कूल का चौथा दौर कहा जाता है 1960 इसके अवसान का दौर था। मार्क्सवाद से अलग प्रस्तावना रखते हुए भी अब तक यह किसी न किसी रूप में मार्क्सवाद की प्रेरणा से जुड़ा था लेकिन एडॉर्नो और होर्खाइमर की मौत के बाद क्रमशः) 1973 और 1969) यह मार्क्सवाद से इतना अलग हो गया कि इस बात की कल्पना नहीं जा सकती कि एक समय में मार्क्सवाद की प्रेरणा से इस स्कूल की स्थापना की गयी थी। अब यह सिर्फ़ एक संस्थान के रूप में रह गया। हालाँकि इसी संस्थान ने मार्क्सवाद और फ्रैंकफर्ट स्कूल की मान्यताओं से गुज़रते हुए हेबरमास जैसे समाज - वैज्ञानिक को'पब्लिक स्फीयर '(public sphere) का रास्ता सुझाया।

पॉपुलर संस्कृति को समझने के क्रम में फ्रैंकफर्ट स्कूल की प्रस्तावना एक अनिवार्य पहलू है क्योंकि एक तो यह मार्क्सवादी विचारधारा से काफ़ी हद तक प्रभावित होते हुए भी विश्लेषण के नये आधारों को समझने की कोशिश करता है और दूसरा कि इसके विश्लेषण का सीधा संबंध संस्कृति से है। संस्कृति का विश्लेषण फ्रैंकफर्ट के आलोचकों द्वारा विस्तारपूर्वक किया गया है। पॉपुलर संस्कृति को लेकर एडॉर्नो)1903-1969(, मैक्स होर्खाइमर)1895-1973(, हरबर्ट मारक्यूजे)1898-1979) और वॉल्टर बेंजामिन (1892-1940 ,की विचारधारा आज भी किसी न किसी रूप में प्रासंगिक हैं (वे चाहे पॉपुलर संस्कृति को नये सिरेसे समझने के क्रम में हो या फिर पॉपुलर संस्कृति के बदलते रूपों की प्रक्रिया देखनेसमझने के रूप में- हो।

एडॉर्नो ने संस्कृति का विश्लेषण करने के क्रम में 'एन्लाइटेंमेंट' (enlightenment) यानी प्रबोधन को अपना आधार बनाया। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक विचार पद्धति के ज़रिये प्रबोधन लाने की जो बात की जा रही थी इस बात को लेकर सवाल खड़े , किये। एडॉर्नो के अनुसार वैज्ञानिक प्रगति के ज़रिये मानव स्वतंत्रता की बात एक दु:स्वप्न से ज़्यादा कुछ भी नहीं है। संस्कृति उद्योग का पूरा प्रभाव प्रबोधन के विरोध में है जिसमें स्वयं प्रबोधन और तकनीकी प्रभुत्व लोगों के लिए छलना /कपट बन जाता है और अंततः यह चेतना की बेड़ियों के रूप में काम करने लग जाता है।[6] एडॉर्नो की यह मान्यता विज्ञान और तर्क के ज़रिये जन के (मास) उद्बोधन के दावे को ध्वस्त करती है। उद्बोधन की यह आलोचना आधुनिक पूँजीव ाद और संस्कृति उद्योग की आलोचना है जिसे कि एडॉर्नो और होर्खाइमर ने 1930- के दौरान विकसित की। यह 40 एक ही साथ उद्बोधन के तर्कों और मार्क्सवादी समीक्षा पद्धति की आलोचना करता है। एडॉर्नो के लिए पॉपुलर संस्कृति के विश्लेषण में आधुनिक पूँजीवाद की सक्रियता और लोग ो ं के दिलों दिमाग़- पर छा जाने वाले उसके असर को समझना अनिवार्य है।

[5] By the time the institute returned to Frankfurt in 1950 the principal ideas of critical theory had baan clearly set out in a number of major writings,and the Frankfurt school began to exert an important influence upon German school thought. टॉम बॉटम्मोरे(2002): दि फ्रैक्फर्ट स्कूल एंड इट्स क्रिटिक्स, राउट्लेज 270 मैडिसन एव, न्यूयार्क,एनबाइ 10016.

[6] For Adorno 'the total effect of the culture industry is one of anti-enlightenment,in which… enlightenment ,progressive technical domination,becomes mass deception and it turned into a means of fettering consciousness.' थ्योडोर एडोर्नो (1991) दि कल्चर इन्डस्ट्री पेज नं-92लंदन ,राउट्लेज ,

RRIJM 2015, All Rights Reserved